

# મુલ હિજજા કે ફઝાએલ ઔર ફુરબાની કે અહકામ

ફુરબાની સે મુતાલિફ પયાસ સે જયાદા  
સવાલાત કે જવાબાત

તરતીબ : અબૂ ઝૈદ ઝમીર

તર્ઝમા : મઝહર ઉમરી વ તસ્લીમ ઉમરી



**ઇસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ**

હોટલ નુરાની પાસે, ડાંડા બજાર, ભુજ - કચ્છ.

M : 84017 86172 - [www.iickutch.blogspot.in](http://www.iickutch.blogspot.in)

# कुल हिज्ज के इत्ताअेल और कुरबानी के अहकाम

तरतीब : अबू जैद जमीर

तर्जमा : मजहर उमरी व तरलीम उमरी

अल्लाह तआला ने इरमाया : (ऐ नबी) आप कहिये, मेरी नमाज, मेरी कुरबानी, मेरा जुना और मेरा मरना अल्लाह रब्बुल आलमीन ही के लिये है, जिस का कोय शरीक नहीं है, और मुझे इसी बात का हुकम दिया गया है, और मैं अल्लाह का पहला इरमाबरदार हूं.

(सूरह अल अन्आम १५२-१५३)

मुजाहिद रहिमहुल्लाह इरमाते हैं, अणुसुक यानी हज और उमरा में की जाने वाली कुरबानी.

(तइसीर एब्ने कसीर)

सयद एब्ने जुबैर रहिमहुल्लाह इरमाते हैं, व नुसुकी यानी मेरी कुरबानी. (तइसीर एब्ने कसीर)

## मुल हिज्जा का पहला अशरा

**१) क्या मुल हिज्जा में रोझे रजना सुन्नत है और ये कितने दिन है?**

नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी जाऊ बीवीयों से रिवायत है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ङिल हिज्जा के नौ दिनों के रोऊा रजा करते थे. (नसाई : अस्सियाम : कैइ यसूमु सलासत अय्यामिन मिन कुल्लि शहरिन) (शैफ अल अलजानी ने सहीह कहा है.)

**२) अरइा के दिन के रोझे की क्या इत्तीलत है?**

अबू कतादा रङिअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से यौमे अरइा के रोऊा के मुताल्लिक पूछा गया, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, यौमे अरइा का रोऊा पिछले और अगले अेक साल के गुनाहों का कइइारा है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे यौमे आशूरा के रोऊे के मुताल्लिक पूछा गया, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, गुऊरे हुअे अेक साल के गुनाहों का कइइारा है. (मुस्लिम : अस्सियाम-१८७७) रापी : अबू कतादा

## क़ुरबानी का हुक़म और अहमियत

**3) क्या पिछली उम्मतों में भी क़ुरबानी मशरूअ रही है?**

अल्लाह तआला ने इरमाया, और हम ने हर उम्मत के लिये क़ुरबानी का दिन तैय किया है, ताकि अल्लाह ने जो जान्पर उन्हें बतोरै रिअक दिये हैं उन्हें अल्लाह का नाम ले कर ऋह करै. (सूरह अल हज-38)

इब्नुल जौअी रहिमहुल्लाह इरमाते हैं, इस आयत का मतलब ये है कि क़ुरबानी करना सिर्फ़ इस उम्मत की भुसूसियत नहीं है बल्कि अल्लाह का नाम ले कर क़ुरबानी करना पहली उम्मतों में भी पाया गया है.

(तइसीरु आदुल मसीर लि इब्निज जौअी)

**4) क़ुरबानी में क्या हिकमत है?**

1. अल्लाह का तर्कुब

2. इब्राहीम अलयहिस्सलाम की सुन्नत का त्रिंदा रजना

3. अहल व इयाल पर पुस्अत

4. कुकरा व मसाकीन को जिला कर उन की आसूदगी

5. योपायों के मुसअर किये जाने पर अल्लाह का

नाम ले कर धरुहारे शुक्र

### प) क्या कुरबानी हज के साथ जास है?

अनस रउअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, नजी सल्ललाहु अलयहि व सल्लमने अपने हाथ से सात उंट उरुह किये और मदीना में सींगों वाले, सइए व सियाह, दो बकरे उरुह किये. (बुजारी : अल हज १७१२)

### ड) क्या कुरबानी वाजिब है?

अल्लाह के रसूल सल्ललाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, जब तुम उलल हलज्ज का यांए ऐज लो और अगर तुम कुरबानी करना याहते हो तो अपने बाल और नापुन ना काटो. (मुस्लिम : अल अउाही-उडपप)  
(रायिया : उम्मे सलमा)

अबू सरीहा अल गलइारी रउअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, में ने अबू बकर रउअल्लाहु अन्हु को पाया : या में ने अबू बकर और उमर रउअल्लाहु अन्हु को ऐजा आप दोनों कुरबानी नहीं करते थे इस डर से कल लोग आप के अमल से कुरबानी को लालुिम ना समउ लें. (बेहकी) शेज अल अलबानी ने कहा : और सनए सहीह है.) (अल धरवा ज. ४ स. पउ हदीस नं. ११३ए) बेहकी ने कहा : अबू सरीहा अल गलइारी अल्लाहके रसूल सल्ललाहु अलयहि व

सल्लमके सहाजी हुजैइा भिन उसैद हे.

(बेहकी : अठ्ठहाया : बाबुल उठहियतु सुणतुन गुहिब्बु लुजूमहा व नकरहु तरकुहा)

**७) क्या कुरबानी के लिअे ञ्जात का निसाब शर्त है?**

अबू मसूद अल अन्सारी रठ्ठअल्लाहु अण्हु इरमाते हैं, कभी मैं कुरबानी नहीं करता हालांकि मैं मालदार हूं इस दर से कि मेरा पड़ोसी ये ना समझ बैठे कि कुरबानी मुझ पर इर्ज है. (बेहकी : अठ्ठहाया : बाबुल उठहियतु सुणतुन गुहिब्बु लुजूमहा व नकरहु तरकुहा)

शोभ अल अलबानी ने कहा : और इस की भी सनद सहीह है. (अल इरवा ४.४ स. ५४ हदीस नं. ११३८)

**८) इसलाम में कुरबानी की कितनी ताकीद है?**

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया : जिस के पास पुसअत हो और वो कुरबानी ना करे तो वो हमारी इदगाह के करीब भी ना आये.

(मुस्नद अहमद, इब्ने माजा, हाकिम) रापी : अबू हुरैराह (सहीह अल जामे ५४८०) (सहीह)

अश शोभ अल अलबानी इरमाते हैं, इस रिवायत को इमाम हाकिम ने मरकूअ व मौकूइ टोनो तरह से रिवायत किया है और मरकूअ को सहीह करार दिया है मगर मौकूइ

क्रियाएँ सहीह मालूम होता है।

अल बरा बिन आज़िब रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, अबू बर्दा ने नमाज़ से पहले कुरबानी की नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने उन से इरमाया, उस की जगह दूसरी कुरबानी कर लो अबू बर्दाने कहा मेरे पास सिर्फ़ “जज़आ” है (वो बर्या जो छ महीने का हो) हदीस के रावी शोअबा कहते हैं, मेरा जयाल अबू बर्दा ने ये ली कहा ये जानवर मुसिन्ना (वो जानवर जिसे एक साल पूरा हुवा हो) से बेहतर है आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया उसे झूँह करो, मगर तुम्हारे बाँट जज़आ की कुरबानी किसी के लिये जायेज़ नहीं होगी। (बुखारी, अल अज़ाही पपप७, मुस्लिम, अल अज़ाही ३५८)

**८) क्या कर्ज़ ले कर कुरबानी कर सकते हैं?**

इब्ने बाज़ रहिमहुल्लाह इरमाते हैं, अगर किसी मुसलमान के पास कर्ज़ अदा करने की कुप्पत हो और वो कुरबानी करने के लिये कर्ज़ ले तो कोई हरज नहीं।

(मजमूअ इतावा इब्ने बाज़ १८/३८)

# कुरबानी करने वाले से मुताल्लिक अहकाम

**१०) क्या एक घर में हर शप्स को कुरबानी करना चाहिये?**

अता बिन यसार रहिमहुल्लाह इरमाते हैं, मैं ने अबू अय्यूब अल अन्सारी से पूछा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के ऋमाने में कुरबानियां कैसे हुवा करती थीं? अबू अय्यूब अल अन्सारी ने इरमाया एक शप्स अपनी जानिब से और अपने घर वालों की जानिब से एक बकरी ऋह करता था, उसे तमाम घर वाले जुट जाते और दूसरों को जिलाते फिर लोगों ने एक दूसरे पर इजर करना शुरु कर दिया और हालत अब ये है जैसी तुम देख रहे हो. (तिर्मिज़ी, एब्ने माजा, बैहडी) शोभ अल अलबानी ने सहीह कहा है. (अल एरवा ११४२)

**११) क्या एक शप्स कई जानवर की कुरबानी कर सकता है?**

अनस रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते है, नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम दो बकरे ऋह करते थे. मैं भी दो बकरे



ऋह करता हूं. (बुजारी, अल अज़ाही पपप३)

### १२) क्या मुसाफ़िर को भी कुरबानी करना चाहिये?

सौबान रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने अपनी कुरबानी की ओर इरमाया, ऐ सौबान ! इस का गोश्त ठीक कर दो. सौबान इरमाते हैं मैं वो गोश्त आप को जिलाता रहा यहां तक कि आप मदीना पहुंच गये. (मुस्लिम, अल अज़ाही ३५४८)

### १३) क्या मथियत की तरफ़ से भी कुरबानी है?

जबिर बिन अब्दुल्लाह रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, एदुल अज़हा के मोके पर मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके साथ एदगाह में मौजूद था आपने भुतबा जत्म किया और मिम्बर से उतर गये आप के पास अक बकरी लाए गए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने उसे अपने हाथ से ऋह किया और इरमाया, बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबर ये मेरी जानिब से और मेरी उम्मत के उन लोगों की जानिब से है जिन्होंने कुरबानी नहीं की. (अबू दाउद, तिर्मिज़ी)

(अबू दाउद बि तहडीकिल अलबानी २८१०) सहीह

१४) जो कुरबानी का इरादा रखता हो वो कब तक बाल और नाभुन ना कतरे? अगर कोई गलती से बाल या नाभुन काट ले तो उस का क्या कइसारा है?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, जिस के पास ऋबीहा है जिस की वो कुरबानी करना चाहता है, जब ऋल हिज्जा का चाँद नजर आ जाये तो वो कुरबानी करने से पहले अपने बाल और नाभुन हर्गिज ना काटे. (मुस्लिम, अल अज्जाही उफफ) रापिया, उम्मे सलमा

## कुरबानी के जान्पर से मुताल्लिक अहकाम

१५) किन जान्परों की कुरबानी दी जाये?

अल्लाह तआला ने इरमाया, ये आठ किस्म के जान्पर हैं, भेड की किस्म से नर और मादा, और बकरी की किस्म से नर और मादा. (सूरह अल अन्आम १४३)

और गींट की किस्म से नर और मादा, और गाय की किस्म से नर और मादा. (सूरह अल अन्आम १४४)

अऋज्जाअन : भेड, अल माअ्ज, बकरी

**१६) उाँट, गाय, बकरी वगैराह में कौन सा जानवर अक़ल है?**

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, जुमाअ के दिन इरिशते मस्जिद के दरवाजे पर ठहर जाते हैं और वो पहले पहल आने वाले के नाम लिखते हैं, अक्वल वक़त में आने वाले का अज़ ऐसा है जैसे उस ने अल्लाह के लिखे उाँट दिया हो, उस के बाद आने वाले का अज़ गाय देने के बराबर है, उस के बाद आने वाले का बकरी देने के बराबर, उस के बाद आने वाले का मुर्गी देने के बराबर, उस के बाद आने वाले का अंडा देने के बराबर, फिर जब इमाम जुतबा शुर् करता है इरिशते अपना रजिस्टर बंद कर लेते हैं और जुतबा सुनते हैं. (बुजारी, अल जुमुआ ८२८, मुस्लिम, अल जुमुआ १४१६)

**१७) नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने कौन जानवरों की क़ुरबानी की है?**

**उाँट की क़ुरबानी :** अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इदुल अज़हा को मदीने में उाँट की क़ुरबानी की, जब आप नहर नहीं करते तो इदगाह में झूँह करते.

(बुजारी, अबू दाउद, नसाय, एब्ने माजा) अल्हाज नसाय के है. (नसाय बितहकीकिल अलबानी ४३५७) सहीह

**गाय या बैल की कुरबानी :** आरशा रज़िअल्लाहु अन्हा इरमाती हैं, जब हम भिना में थे, मेरे पास गाय का गोशत लाया गया, मैं ने कहा, ये क्या है? लोगों ने कहा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने अपनी अऊवाज की जानिब से बैल ऊब्ह किया. (बुजारी, अल अऊाही ५५४८)

**बकरे की कुरबानी :** अनस रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबर कहा और दो बकरे ऊब्ह किये. (बुजारी, अत्तोहीद ७३८८, मुस्लिम, अल अऊाही ३५३५)

**१८) क्या गाय और गींट में हिस्सा लेना दुइस्त है?**

एब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते है, हम नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके साथ अेक सइर में थे, दौराने सइर ही एदुल अऊहा को पा लिया, हम में से गाय में सात लोगोंने और गींट में दस लोगोंने हिस्सा लिया.

(तिर्मिज़ी, एब्ने माजा)

(तिर्मिज़ी बितहकीकिल अलबानी ८०५, १५०१) सहीह

## १९) क्या जरूरी जानवर की कुरबानी जाओऊ है?

आइशा रउअल्लाहु अन्हा और अबू हुँरैराह रउअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जब कुरबानी का इरादा करते तो दो भारी भरकम, मोटे ताऊ, सिंगों वाले, सइँद व काले और जरूसी किये हुँये बकरे परीदते.

(इँवने माजा, मुस्नद अहमद) (सहीह इँवने माजा २५३१)  
(अल इरवा ११४७) शेभ अल अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है.

## २०) क्या बकरे की बजाये बकरी की कुरबानी दी जा सकती है?

इँमाम अन्नवपी रहिमहुल्लाह इरमाते हैं, इस बात पर इँजमाअ है कि ऊबीहा नर हो या मादा दोनों बी कुरबानी के लिये जाओऊ है. अलबत्ता अइऊल नर है या मादा इस में इँजतिलाइ है. (अल मजमूअ ४.८, स. ३८७)

## २१) कुरबानी के जानवर की उमर कितनी होनी चाहिये?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, मुसिन्ना की कुरबानी दिया करो, अगर तुम्हें मुसिन्ना ना मिले तो जऊआह बेड ही ऊँह कर लो.

(मुस्लिम, अल अऊाही १८५३)

ઇબ્ને માલિક રહિમહુલ્લાહ ફરમાતે છે, મુસિન્ના બડી ઉમર કે જાનવર કો કહતે છે, ઊંટ મેં એસા જાનવર જિસ કે પાંચ સાલ પૂરે હુવે હો ઓર છટે સાલ મેં દાખિલ હુવા હો, ગાય મેં મુસિન્ના વો હૈ જિસ કે દો સાલ પૂરે હુવે હો ઓર તીસરે સાલ મેં દાખિલ હુવા હો, ઓર ભેડ વ બકરી મેં મુસિન્ના વો હૈ જિસ કા એક સાલ પૂરા હુવા હો.

(ઓનુલ મઅબૂદ, હદીસ ૨૭૯૭)

**૨૨) કુર્બાની કે લિએ કૌન સા જાનવર જાએજ નહીં?**  
 જાનવર ખરીદને કે બાદ ઉસ મેં એબ નિકલ આએ તો કયા કરે?

અલ્લાહ કે રસૂલ સલ્લલાહુ અલયહિ વ સલ્લમને ફરમાયા, ચાર કિસ્મ કે જાનવર એસે છે જો કુર્બાની કે લિએ જાએજ નહીં. વો જાનવર જો કાના હો જિસ કા કાના પન વાઝેહ હો, બીમાર જિસ કી બીમારી વાઝેહ હો, અપાહિજ જિસ કા લંગડાપન ઝાહિર હો, નિહાયત હી કમઝોર જિસ કી હડિયો મેં ગૂદા હી ના હો.

(માલિક, મુસ્નદ અહમદ, અબૂ દાઉદ, તિર્મિઝી, નસાઈ, ઇબ્ને માજા, ઇબ્ને હિબ્બાન, હાકિમ, બૈહકી) રાવી : અલ બરા (સહીહ અલ જામે ૮૮૬) સહીહ અલ અજઙા, કમઝોર જાનવર જિસ મેં ગોશત ના હો.

**२३) क्या कान कटा हुआ जानवर कुरबानी में जाओऊ हैं?**

इब्नुल उसैमीन रहिमहुल्लाह इरमाते हैं, जिस जानवर का कान कटा हो या सींग टूटा हो ऐसा जानवर कुरबानी के लिये जाओऊ है लेकिन मकड़ह है इस लिये के वो नाकिस है. क्यूंकि नबी सल्ललाहु अलयहि व सल्लमने हमें हुकम दिया कि हम आंभ ओर कान अच्छी तरह देख लें यानी हम ऐसा जानवर लें जिस के आंभ ओर कान ठीक ठीक हो.  
(मजमूअ इतावा व रसाइलुल उसैमीन (२५/४०))

अली रऊअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, हमें अल्लाह के रसूल सल्ललाहु अलयहि व सल्लमने (जानवर के) कान ओर आंभ अच्छी तरह देख लेने का हुकम दिया.

(नसाइ, इब्ने माजा)

(नसाइ बितहकीकिल अलबानी ४३७५) (हसन सहीह)

**२४) कुरबानी के लिये महंगा जानवर अइजल है या मोटा?**

अल्लाह तआला ने इरमाया, और जो कोय अल्लाह के शआइर (नशानियों) की ताळीम करता है तो ये काम दिलों की परहेजगारी की दलील है. (सूरह अल हज ३२)

मुजाहिद रहिमहुल्लाह इरमाते हैं, अल्लाह तआला इरमाता है, (और जो कोय अल्लाह के शआइर (नशानियों)

की ताज़ीम करता है) यानी कुरबानी के लिये बडा जान्पर लेना, उसे जुब मोटा और इरबा करना और अरुषा जान्पर युनना. (अस्सहीह अल मसबूर भिन तइसीर बिल मासूर (3/४१५))

यहया भिन सईद रहिमहुल्लाह इरमाते हैं, मेंने उमामा भिन सहल रऊिअल्लाहु अन्हु को इरमाते हुये सुना, हम मदीना में कुरबानी के जान्पर को जुब मोटा करते और मुसलमान भी अपने जान्परों को जुब मोटा करते.

(जुभारी : तालीकन झिल अऊाही बाबु अऊहियतुन्नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम)

**२५) कुरबानी का जान्पर जो जाये या मर जाये तो क्या और जान्पर जरीदना लाज़िम है?**

अब्दुल्लाह भिन उमर रऊिअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, जिस ने कुरबानी का जान्पर जरीदा फिर वो जान्पर जो जाये या मर जाये अगर कुरबानी नऊर पूरी करने के लिये थी तो उस की जगह वो दूसरा जान्पर जरीद ले और अगर कुरबानी नइल थी तो याहे जान्पर जरीदे या ना जरीदे.

(मौत्ता लि इब्ने मालिक) (मौत्ता इमाम मालिक अल आऊमी (3/५५८) रकम १४१८)

तमीम भिन हुयैस अल अऊ्दी रहिमहुल्लाह इरमाते



हैं, मेरी कुरबानी का जान्पर जल्द करने से पहले जो गया, मैं ने अपने अज्बास से पूछा आप ने इरमाया, कोय (हरज की) बात नहीं.

(अल मोहल्ला मसायल ८७३, ४.५, स.१०)

**२५) क्या अक जान्पर में कुरबानी और अकीका की नियत की जा सकती है?**

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, जिस ने हमारे दिन में कोय नय चीज एजाद की जो उस में ना थी तो वो मर्दूह है. (जुजारी, अरसुलह २५८७, मुस्लिम, अल अक्त्रिया ३२४२)

## **कुरबानी के वकत से मुतालिक अहकाम**

**२७) कुरबानी के कितने दिन हैं?**

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने जुत्बा में इरमाया, तमाम अय्यामे तशरीक कुरबानी के दिन है. (मुस्नद अहमद) रावी : जुबैर बिन मुतयम

(सहीह अल जामे ४५३७) (सहीह)

अय्यामे तशरीक ११, १२, १३ त्रिल हिज्जा

## २८) कुरबानी किस दिन करना अइजल है?

जरा बिन आज़िब रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, में ने नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का भुतबा सुना आप इरमा रहे थे, एस दिन की एब्तिदा नमाज़ पढ कर करेंगे फिर वापस लौटेंगे और कुरबानी करेंगे जिस ने एस तरह किया उस ने हमारे तरीके पर अमल किया.

(जुभारी, अल एंटेन ८५१, मुस्लिम, अल अज़ाही ३५२७)

## २९) क्या एद की नमाज़ से कबल कुरबानी कर सकते हैं?

जरा रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, हमें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने एद के दिन इरमाया, (एद की) नमाज़ से कबल कोए कुरबानी ना करे.

(मुस्लिम, अल अज़ाही ३५२८)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, जो हमारी तरह नमाज़ पढता हो, और हमारे किबले को किबला मानता हो तो वो हरगिज़ नमाज़ से पहले कुरबानी ना करे. (जुभारी, अल अज़ाही ५५५३, मुस्लिम, अल अज़ाही ३५२५) रावी : अल जरा रज़िअल्लाहु अन्हु.

## ३०) क्या कुरबानी भुतबे से कबल करना सहीह है?

जुनुदुब रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते है, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने एद के दिन नमाज़

पढी फिर जुतबा दिया फिर कुरबानी की. (बुजारी, अबवाबुल एदैन ८८५, एसी तरह मुस्लिम में है)

**३१) जो गलती से नमाजे एद से पहले कुरबानी करे वो क्या करे?**

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, जिस ने एद की नमाज से पहले कुरबानी की वो दोबारा कुरबानी करे. (बुजारी, अल अजाही ५५४८, मुस्लिम, अल अजाही ३५३०) रापी अनस

जुन्दुब बिन सुफियान अल जजली रजिअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, हम ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के साथ कुरबानी की, कुछ लोगों ने नमाज से पहले ही कुरबानी कर दी, जब आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने नमाज मुकम्मल की तो देखा लोगोंने नमाज से पहले ही कुरबानी की है, आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, जिस ने नमाज से पहले झब्ह किया वो दोबारा झब्ह करे और जिस ने हमारी नमाज पढने तक कुरबानी नहीं की वो अल्लाह का नाम ले और कुरबानी कर ले. (बुजारी, अज़्ज़बाहे, ५५००, मुस्लिम, अज़्ज़बाहे वस्सयद ५०७५)

## 32) क्या रात में कुरबानी जाये? है?

ઇબ્ને અબ્બાસ રઝિઅલ્લાહુ અન્હુ ફરમાતે હૈ, નબી સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમને રાત મેં કુર્બાની કરને સે મના ફરમાયા.

(તબરાની ફિલ કબીર ૧૧૪૫૮) (ચે હદીસ ઝઇફ હૈ)

ઇબ્ને હજર રહિમહુલ્લાહ ફરમાતે હૈ, ઇસ કી સનદ મેં સુલૈમાન બિન સલમા અલ ખબાઇરી હૈ જો કિ મતરૂક હૈ.

(અત્તલકીસુલ હબીર (૪/૩૫૨))

ઇબ્નુલ ઉસૈમીન રહિમહુલ્લાહ ફરમાતે હૈ, રાત મેં કુર્બાની કરના મફૂહ નહીં હૈ. ઇસ કી કરાહિયત કી કોઇ દલીલ નહીં. કરાહત હુકમે શર્અી હોતા હૈ જો દલીલ કા મોહતાજ હોતા હૈ.

(અહકામુલ અઝહિય્યા વઝઝકાત (૨/૨૨૭))

ઇબ્નુલ ઉસૈમીન રહિમહુલ્લાહ ફરમાતે હૈ, કુર્બાની રાત ઓર દિન મેં કિસી ભી વકત કી જાસકતી હૈ અલ બતા દિન મેં કુર્બાની કરના ઝયાદા અફઝલ હૈ.

(અહકામુલ અઝહિય્યા વઝઝકાત)

## ऋह से मुताल्लिक अहकाम

### 33) कुरबानी कहाँ करना चाहिये?

एब्ने उमर रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ऋह और नहर दोनों एदगाह में करते थे. (बुजारी, अल अज़ाही पपपर)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, अरइत सारा ही मकामे पुकूइ है और पूरा मिना कुरबानगाह है. मुइदलिइ पूरा ही पुकूइ की जगह है. मक्का की तरइ आने वाली हर राह रास्ता ली है और कुरबानगाह ली. (सहीह अबू दाउद १७०७) (हसन सहीह)

### 34) ऋह की कैइयत और दुआ क्या है?

अनस रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने दो सइद व काले बक़रे ऋह किये, मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमको देजा आपने अपना कदम उन बक़रों के पहलू पर रजा. बिस्मिल्लाह और अल्लाहु अइबर कहा और अपने हाथ से उन्हें ऋह किया. (बुजारी, अल अज़ाही पपपट, मुस्लिम, अल अज़ाही 3५3५)

और अक रिवायत में है, आप ने बकरा लिया, उसे थित लिटा दिया और ऋह करते हुअे ये दुआ पढी: “ बिस्मील्लाहि अल्लाहुम्म तकब्बल मीन मुहम्मदीन व आल मुहम्मदीन व मीन उम्मती मुहम्मदीन”

(अल्लाह के नाम से ऋह करता हूं अै अल्लाह ! मुहम्मद और आले मुहम्मद और उम्मते मुहम्मद की जानिब से एसे कबूल इरमा) फिर आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने ऋह किया. (मुस्लिम, अल अजाही 3337)

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रऋअल्लाहु अन्हुं इरमाते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने कुरबानी के दिन दो सींग वाले, थित्कबरे, भस्सी किये हुअे बकरे भरीटे. जब उन्हें ऋह करने लिटाया तो ये दुआ पढी: “एन्नीवऋहतु वऋहि-य लिल्लऋी इतरस्समापाति वल अर-ऋ अला मिलती एब्राहीम हनीइंप् वमा अना भिनल मुशरिकीन. एन्नसलाती व नुसुकी व महया य व-ममाती लिल्लाहि रब्बल आलमीन. लाशरी-क-लहु वभिऋालि क उभिरतु व-अना भिनल मुस्लिमीन. अल्लाहुम्म भिऋ, व-ल-क व-अन मुहम्मदीन व उम्मतीही बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबर” (में ने अपना इभ उस जात की तरइ कर लिया है जिस ने आसमानों और

ऋमीन को पैदा किया है, अब्राहिम अलयहिस्सलाम की मिल्लत पर, इस हाल में कि मैं ने अल्लाह के सिवा सब से मुंह मोड लिया है, और मैं मुशिरकों में से नहीं हूँ, मेरी नमाज़, मेरी कुरबानी, मेरा जुना और मेरा मरना अल्लाह रब्बुल आलमीन ही के लिये है, जिस का कोय शरीक नहीं, और मुझे इसी बात का हुकम दिया गया है, और मैं अल्लाह का इरमांवरदार हूँ, ऐ अल्लाह ! तेरी ही जानिब से, तेरे ही लिये ये कुरबानी है. इस कुरबानी को मुहम्मद और आप की उम्मत की जानिब से कबूल इरमा. मैं अल्लाह का नाम ले कर कुरबानी करता हूँ और अल्लाह सब से बडा है.) फिर आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने ऋह किया.

(अबू दाउद, एब्ने माजा)

(अबू दाउद बितहकीकिल अलबानी २७८५)

एब्ने तेमियाह रहिमहुल्लाह इरमाते हैं, ऋबीहा याहे कुरबानी का हो या कोय और हो, उसे बायें पहलू पर लिटाया जाये और ऋह करने वाला अपना दायां पैर उस की गर्दन पर रजे जैसा कि सहीह हदीस से साबित है.

(मजमु इतावा ४. २५, स. ३०८)

**३५) उंट को नहर करने का तरीका क्या है?**

अब्दुर रहमान बिन साबित रऋअल्लाहु अन्हु

इरमाते हैं, नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और सहाबा रज़िअल्लाहु अन्हुम ङिंट नहर करते थे वो ँस तरह कि ङिंट का बाया पैर बांघ ढेते, ङिंट अपने बाकी पैरों पर ढडा रहता. (अब्जू ढाउँढ) (सहीह अब्जू ढाउँढ, १५५३)

### **३५) गाय या बैलको ञ्ढ्ह किया जाये या नहर?**

अल्लाह तआला ने इरमाया, और जब मूसाने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह तुम्हें ँस बात का हुकम ढे रहा है कि अेक गाय ञ्ढ्ह करो. (सूरह अल बकरा ५७) बाञ ँलाकों में गाय ञ्ढ्ह करने पर पाबंढी है लिहाञा कुरबानी करने वाला ँस बात का ढयाल रजे कि वो कोँ अैसी चीञ ना करे जिस से कानूनी तौर पर उसे परेशानी का सामना करना ढडे.

### **३७) ञ्ढ्ह करने की छुरी कैसी होनी चाहियें?**

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, जब तुम ञ्ढ्ह करो तो ञ्ढ्ह में ढी अरछाँ का सुलूक करो ँस तरह की तुम अपनी छुरी को ढूढ तेञ कर लो ताकि अपने ञ्ढीहा को आराम ढे. (मुस्लिम, ३५१५)

ँढ्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का गुञर अेक शाढ्स पर से हुवा, जिस ने बकरी के ढहलु पर पैर रढा



था ओर छुरी तेज कर रहा था, बकरी उसे टेज रही थी, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, ये पहले ही क्यूं ना किया? क्या तुम उसे दौ मौत देना चाहते हो. (तब्रानी इल अपसूत 340) (अस्सहिहा 28)

### 34) ऋषि में कितनी रगें काटना चाहिये?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, नाभुन ओर दांत के सिवा हर वो चीज जिस से जान्पर की रगें काटी गइ हो उस का जाना जायेज है.

(बेहकी इल कुबरा) रावी : अबू उमामा अल बाहिली

(अस्सहीहा 2024) (अपने शपाहिद से कपी है)

(सहीह अल जामे 7765) सहीह

### 35) क्या कुरबानी के जान्पर के साथ सप्टी करना सहीह है?

मुहम्मद बिन सीरीन रहिमहुल्लाह इरमाते हैं, उमर रजिअल्लाहु अन्हु ने अक शप्स को देजा वो बकरी को ऋषि करने के लिअे घसीटता हुवा ले जा रहा था, आप ने उसे कोडा मारा ओर कहा, तुझे मां ना रहे, उसे मौत की जानिब नर्मा से ले जा. (बेहकी) (अस्सहिहा 30)

**૪૦) કયા કુર્બાની કરને વાલે કો જાનવર ખુદ ઝબ્હ કરના ચાહિયે?**

અનસ રઝિઅલ્લાહુ અન્હુ ફરમાતે હૈ, નબી સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમને દો મોટે તાઝે, સીંગો વાલે બકરે ખુદ અપને હાથ સે ઝબ્હ કિએ. (બુખારી, અલ અઝાહી પપકપ, મુસ્લિમ, અલ અઝાહી ૩૬૩૫)

**૪૧) કયા ઔરત ઝબ્હ કર સકતી હૈ?**

અબૂ મૂસા અલ અશ્શરી રઝિઅલ્લાહુ અન્હુ સે રિવાયત હૈ, આપ અપની બેટિયો કો હુકમ દેતે કિ વો અપની કુર્બાની ખૂદ અપને હાથો સે કરે.

(મુસન્નફ અબ્દર રઝઝાક ૮૧૬૯)

ઇમામ બુખારી રહિમહુલ્લાહ ફરમાતે હૈ, ઔર અબૂ મૂસા રઝિઅલ્લાહુ અન્હુને અપની બેટિયો કો હુકમ દિયા કિ વો અપની કુર્બાની ખૂદ કરે.

(બુખારી, અલ અઝાહી, બાબુ મન ઝબ્હ ઝહિયતહુ ગૈરહુ)

**૪૨) કયા કુર્બાની મેં કિસી ઔર સે ઝબ્હ કરા સકતે હૈ?**

જાબિર રઝિઅલ્લાહુ અન્હુ ફરમાતે હૈ, નબી સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ અપને સાથ (સો) ૧૦૦ ઊંટ લે ગએ, જબ આપ કુર્બાનગાહ લોટે તો (તિર્સઠ) ૬૩ જાનવર અપને હાથ સે ઝબ્હ કિએ, ફિર અલી રઝિઅલ્લાહુ

अन्हु को हुकम दिया, अली रज़िअल्लाहु अन्हुने बकिया  
जान्पर ऋह किअे.

(मुस्लिम, अबू दाउद, एब्ने माजा, एब्ने हिब्बान और  
अल्झाज़ एब्ने हिब्बान के हें)

(अत्तालिकातुल हिसान ४००७)

(मुस्लिम, अल हज २०३७)

**४३) क्या कुरबानी करने वाले का नाम लेना जरूरी है?**

शेजुल उस्सैमीन रहिमहुल्लाह इरमाते हें, अगर ऋह  
करने वाला कहे कि ये कुलां की जानिब से है तो ये अइज़ल है,  
एस लिअे कि नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने कहा, ये  
तेरी ही तरफ़ से (अता) है तेरे ही लिअे है (उसे) मुहम्मद  
की ओर आले मुहम्मद की जानिब से (कबूल इरमा) अगर  
पो ठिक ना करे तो निर्यत काई हो जाअेगी अल बत्ता ठिक  
करना अइज़ल है.

(इतावा नूर अलदरब लिल उस्सैमीन, अल अज़ाही)

**४४) अगर ऋह के पकत सहपन अल्लाह का नाम ना  
लिया जाअे तो क्या गोशत हलाल है?**

अल्लाह तआला ने इरमाया, और एस जान्पर का  
गोशत ना जाओ जिस पर अल्लाह का नाम ना लिया गया  
हो. (सूरह अल अन्आम १२१)

ઇબ્ને અબ્બાસ રઝિઅલ્લાહુ અન્હુ ફરમાતે હૈં, મુસ્લિમ મેં અલ્લાહ કા નામ હોતા હી હૈ, અગર કોઇ મુસ્લિમ ઝબ્હ કરે તો અલ્લાહ કા નામ લેના ભૂલ જાએ તો વો ઝબીહા કા ગોશત ખા લે ઓર અગર કોઇ મજૂસી ઝબ્હ કરે ઓર ઝબ્હ કરતે વકત અલ્લાહ કા નામ લે તો ઉસે ના ખાઓ.

(અબ્દુર રઝઝાક ૮૫૪૮) સહીહ

**૪૫) હામેલા જાન્વર સે નિકલા મુદા જનીન હલાલ હૈ યા હરામ?**

અબૂ સઇદ રઝિઅલ્લાહુ અન્હુ ફરમાતે હૈં, હમ ને કહા, એ અલ્લાહ કે રસૂલ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ ! હમ ઉંટની, ગાય ઓર બકરી ઝબ્હ કરતે હૈં ફિર ઉસ કે પેટ મેં બચ્યા પાતે હૈં તો કયા ઉસે છોડ દેં યા ખા લેં ? આપ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમને ફરમાયા, અગર તુમ યાહો તો ખા લો, ઉસ કી મા કો ઝબ્હ કરના હી ઉસ કા ઝબ્હ કરના હૈ. (અબૂ દાઉદ, હાકિમ) રાવી : જાબિર

(મુસ્નદ અહમદ, અબૂ દાઉદ, તિર્મિઝી, ઇબ્ને માજા, ઇબ્ને હિબ્બાન, દારકુત્ની, હાકિમ) રાવી : અબૂ સઇદ

(હાકિમ) રાવી : અબૂ અચૂબ ઓર અબૂ હુરૈરહાહ

(તબ્રાની) રાવી : અબૂ ઉમામા, અબૂ દર્દા ઓર કઅબ બિન માલિક (સહીહ અબૂ દાઉદ ૨૪૫૧) અલ્ફાઝ અબૂ દાઉદ કે

હે. (સહીહ અલ જામે ૩૪૩૧) (સહીહ)

## ગોશ્ત ઔર ખાલ કે અહકામ

**૪૬) કયા કુર્બાની કરને વાલે કુર્બાની કા ગોશ્ત ખા સકતે હૈં?**

અલ્લાહ કે રસૂલ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમને ફરમાયા, કુર્બાની કે જાનુવર કા ગોશ્ત ખાઓ, યાહે તો ઝખીરા કરો. (મુસ્નદ અહમદ, હકિમ)

રાવી : અબૂ સઈદ વ કતાદા બિન અન્નોઅમાન ઈસ કી અસલ બુખારી વ મુસ્લિમ હૈ.

(સહીહ અલ જામે ૪૫૦૩) (સહીહ)

અલ્લાહ કે રસૂલ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમને ફરમાયા, જબ તુમ મેં સે કોઈ કુર્બાની કરે તો અપની કુર્બાની મેં સે ખા લે.

(અસ્સહીહા ૩૫૬૩ જ. ૭, સ. ૧૫૨૩)

(અપને શવાહિદ સે હસન હૈ)

**૪૭) કુર્બાની કે ગોશ્ત કા કયા કિયા જાએ?**

અલ્લાહ તઆલા ને ફરમાયા, પસ તુમ લોગ ખાઓ

और लुके इकीर को भी जिलाओ. (सूरह अल हज २८)

सल्मा बिन अइप्पा रजिअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, जब तुम में से कोय कुरबानी करे तो तीन दिन के बाद उस के घर में उस कुरबानी के गोशत में से कुछ बाकी ना रहे. जब दूसरा साल आया तो सहाबा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ! क्या हम इस साल भी किया था? अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, तुम भूट जाओ दूसरों को जिलालओ और ऋभीरा कर लो इस लिये कि उस साल लोग तंगहाल थे लिहाजा मैं ने उन की मदद करने के लिये ऐसा कहा था.

(बुजारी, अल अजाही पपड, मुस्लिम, अल अजाही ३५४८)

और अेक रिवायत में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, तुम भुट जाओ, सदका करो और ऋभीरा कर लो.

(अबू दाउद) (सहीह अबू दाउद २४३८) रापीया : आर्श।

**४८) कुरबानी का गोश्त कितने दिन तक रखा सकते हैं?**

जबिरे रज़िअल्लाहु अन्हु इरमाते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने तीन दिन के बाद कुरबानी का गोश्त खाने से मना इरमाया था, फिर आपने इरमाया, ખૂદ ખાઓ, उस का तोशा लो और झपिरा कर लो.

(मुस्लिम, अल अज़ाही ३५४४)

**४९) नमाज़े एद से पहले कुरबानी करे तो क्या वो गोश्त हलाल है?**

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, जिस ने नमाज़ से पहले कुरबानी की तो वो सिर्फ़ गोश्त है जो उस ने अपने घर वालों के लिये पेश किया है, वो कुरबानी हरगिज़ नहीं है. (बुखारी, अबवाबुल एदैन ८५५, मुस्लिम, अल अज़ाही ३५४७)

**५०) क्या कुरबानी का गोश्त गैर मुस्लिम को देना ज़ाअि है?**

अल्लाह तआला ने इरमाया, अल्लाह तुम्हें उन लोगों के साथ हुसने सुलूक और एन्साइ करने से नहीं रोकता, जिन लोगों ने दीन के बारे में तुम से जंग नहीं की, और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला, बेशक अल्लाह

ઇન્સાફ કરને વાલોં કો પસંદ કરતા હૈ.

(સૂરહ અલ મુમ્તહિના ૮)

શોખ બિન બાઝ રહિમહુલ્લાહ ફરમાતે હૈ, ઐસા કાફિર જિસ સે હમારી જંગ નહીં હૈ જેસે મુસ્તામિન યા મુઆહિદ ઉસે કુર્બાની યા સદકા દિયા જા સકતા હૈ.

(મજમૂઅ ફતાવા ઇબ્ને બાઝ (૧૮/૪૮))

**પ૧) કુર્બાની કે જાન્પર કે ચમડે વગૈરાહ કા કયા કિયા જાએ?**

અલી રઝિઅલ્લાહુ અન્હુ ફરમાતે હૈ, નબી સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમને ઉન્હે હુકમ દિયા કિ વો આપ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કે જાન્પરોં કો ઝબ્હ કરે ઓર ઉન કા ગોશત, ચમડા, પાલાન સબ કે સબ તક્સીમ કર દે ઓર કસાબ કો ઉસ મેં સે કુછ ના દે.

(બુખારી, અલ હજ ૧૭૧૭)

મુસ્લિમ કે અલ્ફાઝ ઇસ તરહ હૈ, આપને ફરમાયા, હમ કસાઇ કો (ઉસ કી ઉજરત) અપની જાનિબ સે દેંગે.

(મુસ્લિમ, અલ હજ ૨૩૨૦)



# અપીલ

અલ્હમ્દુલીલ્લાહ, ઇસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-ભુજની સ્થાપના ૨૦૧૨ ના વર્ષમાં થઈ હતી. તેનો હેતુ અલ્લાહના દીનથી અજાણ લોકો સુધી ઇસ્લામનો સંદેશ પહોંચાડવાનો છે. સંસ્થા દીનની દાવત માટે જે કંઈ કરી રહી છે તેની માહિતી આપ સૌ સુધી પુસ્તકોના માધ્યમથી પહોંચતી રહી છે. આપ જાણો છો કે દીનની સાહિત્ય છપાવવા માટે વિશેષ આયોજન અને નાણાકીય ભંડોળની જરૂર રહે છે. આ સંદર્ભમાં આપને તન-મન અને ધનથી સંસ્થાને સહકાર આપવાની નમ્ર અપીલ કરીએ છીએ.

# કુર્બાની કી દુઆ

“ઈન્નીવજ્જહતુ વજ્હિ-ય લિલ્લાહી ફતરસ્સમાવાતિ વલ અર-ઝ હનીફંવ્ વમા અના મિનલ મુશરિકીન. (૧) ઈન્નસલાતી વ નુસુકી વ મહયા ય વ-મમાતી લિલ્લાહિ રબ્બલ આલમીન. (૨) લાશરી-ક-લહુ વબિઝાલિ ક ઉમિરતુ વ-અના અવ્વલુલ મુસ્લિમીન. (૩) બિસ્મિલ્લાહિ અલ્લાહુ અકબર, અલ્લાહુમ્મ મિન્ક, વ-લ-ક મીન..... (૪) (સહીહ)

(૧) સૂરએ અન્આમ : ૭૯ (૨) સૂરએ અન્આમ : ૧૬૨  
(૩) સૂરએ અન્આમ : ૧૬૩ (૪) સહીહ ઈબ્ને ખુઝૈમહ :  
કિતાબુલ મનાસિક બિતહ કી કે અદ્ દકતૂર મુહમ્મદ મુસ્તફા  
અલ આઝમી (૪/૨૮૭)